

शुद्धि

शुद्धि

वन्दना यादव

अ

नेक चरित्रों को समेटे इस उपन्यास में हालात इस तरह बदलते हैं कि रिश्तों के छलावों में कई बार दूसरों को छलने वाले चरित्र खुद को

छला हुआ भी महसूस करते हैं। उपन्यास की शुरुआत परिवार के मुखिया शेर सिंह की मृत्यु से होती है। पंडित जी के कहे अनुसार मृत व्यक्ति की आत्मा, शुद्धि तक घर में रहने वाली है। बस यहीं से शुरू होता है उपन्यास का ताना-बाना जहां मृतक की पत्नी अपने पति की आत्मा के जरिए घर-परिवार के लोगों के बदलते व्यवहार और यहां तक कि अपनी औलाद के असली चेहरों को भी देख पाती है। उपन्यास में वर्णित कुछ ऐसी परंपराओं और संस्कृतियों का उल्लेख है, जो पाठकों को इक्कीसवीं सदी में भी तरह की परंपराओं को मानने वाले समाज के बारे में जानने की जिज्ञासा पैदा करेंगी।

उपन्यास में सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य के साथ इंसान के स्वार्थ की पराकाष्ठा देखने लायक है। दुख के माहौल में घर की चारदीवारी में रह रही महिलाओं का दहलीज के भीतर से लेकर अपने कार्यस्थल और राजनीति तक में दखल को दिलचस्प किस्सों और घटनाओं में पिरोया गया है। जीवित रहते हुए शेर सिंह का मानना था कि मृत्यु के बाद दूसरा जन्म निश्चित है। मृत्यु के बाद की दुनिया और पुनर्जन्म के बारे में शेर सिंह के बयान किए किस्से उस अनदेखी दुनिया से रूबरू करवाएंगे जो धरती पर रहने वालों को तिलिस्म जैसा जान पड़ता है।

मुखौटों में रहने वाले समाज का बारीक चित्रण है 'शुद्धि' उपन्यास। घर की वयोवृद्ध महिला रामप्यारी का नब्बे की उम्र के बाद नई बातें सीखने और अपनी सोच में बदलाव को स्वीकारते देख कर मन में आशा जगती है। जाति प्रथा को दरकिनार करते हुए रामप्यारी का अचंभित करने वाले निर्णय लेना, विधवा जीवन पर रटे-रटाए सामाजिक नियमों को मानने से इंकार करने जैसे निर्णयों के साथ उपन्यास अपने अंत पर पहुंच कर पाठकों को वैचारिक स्तर पर नया फलक देता हुआ लगेगा।

**शुद्धि : वंदना यादव; भारतीय ज्ञानपीठ,
18 इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई
दिल्ली; 360 रुपए।**